'आजादी के बाद भी हम अंग्रेजी साहित्य के साये से बाहर नहीं आ पाए'

अमर उजाला ब्यूरो

एमजेपी रुहेलखंड विवि में आयोजित सम्मेलन में उपस्थित अतिथि। *अमर उजाला*

बरेली। एमजेपी रुहेलखंड विश्वविद्यालय में पंडित दीन दयाल उपाध्याय शोधपीठ पर शनिवार को वैश्विक चुनौतियों के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा में हुए सम्मेलन हुआ। मुख्य वक्ता प्रोफेसर अशोक कुमार मोदक राष्ट्रीय प्रोफेसर यूजीसी ने कहा कि आजादी के बाद भी आज हम अंग्रेजी साहित्य के साये में जी रहे हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा को कहीं छुपा दिया गया। आज की पीढ़ी भी अंग्रेजी के पीछे भागती है जबकि दुनिया भर के देश अपनी भाषा को आगे बढ़ा रहे हैं। हमेशा प्राथमिक साहित्य का अध्ययन करने पर जोर दिया। गिरती शिक्षा व्यवस्था पर भी भी उन्होंने चिंता जाहिर की। उन्होंने कहा कि ज्ञान कभी चोरी नहीं हो सकता। बांटने से ज्ञान बढ़ता है। दुनिया में आज भारत का कद बढ़ रहा है। कुलपति प्रोफेसर अनिल शुक्ल ने नकारात्मक लेखनी पर खेद प्रकट किया। शिक्षा ही हमें सही और गलत की पहचान कराती है नहीं तो एक इंसान और पशु में कोई फर्क नहीं। अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के सह संगठन मंत्री ओमपाल सिंह ने जापान का उदाहरण देकर कहा कि वहां का प्रत्येक नागरिक देश सेवा के लिए शिक्षा हासिल करता है। जबकि हम सब विभिन्न जीविकोपार्जन के माध्यम को अपना जीवन लक्ष्य समझ लेते हैं। इस मौके पर प्रोफेसर पवन कुमार, प्रोफेसर बीआर कुकरेती, प्रोफेसर एनएन पांडेय, डॉ. प्रवीन तिवारी, डॉ. राम बाबू आदि मौजूद रहे।

यूजीसी के सदस्य प्रो. अशोक मोदक बोले, अंग्रेजी के बजाय भारत का साहित्य पढ़ने की जरूरत

वस्तुएं भले दे दें, हमें सभ्यता नहीं दे सकते विदेशी

जागरण संवाददाता, बरेली : आजादी के बाद भी हम अंग्रेजी साहित्य के साये में पलते-बढ़ते रहे। जिसमें कुत्सित मानसिकता का प्रदर्शन किया गया था। भारतीय ज्ञान परंपरा छिपा दी गई। इसलिए आज हमें प्राथमिक साहित्य पढ़ने की जरूरत है। क्योंकि विदेशी, भारतीयों को वस्तु और सेवाएं तो दे सकते हैं, पर सभ्यता और संस्कृति नहीं। भारतीय साहित्य में शिक्षा की चिंता थी। विदेशियों ने हमारी परंपरा को अपनाया। आज दुनिया तमाम मुद्दों पर भारत का नजरिया जानना चाहती है। इसलिए क्योंकि हम शिक्षित भी हैं और संस्कारी भी। शनिवार को रुहेलखंड विश्वविद्यालय में विवि प्रशासन और प्रज्ञा प्रवाह की ओर से 'वैश्विक चुनौतियों के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में बोलते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-यूजीसी के सदस्य प्रोफेसर अशोक मोदक ने ये बातें कहीं।

रुहेलखंड विवि में हुए सेमिनार में मौजूद अतिथि • जागरण

सेमिनार

- **वक्ताओं ने प्राथमिक साहित्य के अध्ययन की दी सलाह**
- **रुहेलखंड विश्वविद्यालय में आयोजित किया गया सेमिनार**

सेमिनार में उन्होंने भारतीय शिक्षा प्रणाली पर विस्तार से प्रकाश डाला। विकास के बारे में कहा कि मानव स्वतंत्रता में विस्तार लाए, वही असल विकास है। आज हमें आत्म विश्लेषण की जरूरत है। रुविवि के कुलपति प्रो. अनिल शुक्ल ने भारतीय ज्ञान पर चर्चा करते हुए कहा कि हमारा ज्ञान सामाजिक सिद्धांतों पर आधारित है। यह हमें सच की खोज के प्रति ले जाता है। कुलपति ने शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र होने की भी जरूरत जताई। बाजारवाद को शिक्षा पर हैरत जताते हुए कहा कि आधुनिक शिक्षा ने ताकत तो दी पर आत्मिक सुखों से दूर कर दिया। मुख्य अतिथि अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री ओमपाल सिंह ने शिक्षा को देश सेवा के भाव से ग्रहण करने का संदेश दिया। इस दौरान प्रो. बीआर कुकरेती, प्रो. प्रवीण कुमार तिवारी, डा. क्षमा पांडेय, डॉ. रामबाबू, डॉ. ज्योति पांडेय, डॉ. मीनाक्षी द्विवेदी आदि मौजूद रहे।

आरयू में पं. दीन दयाल उपाध्याय की जयंती पर हुई गोष्ठी.

सत्य वहीं है जिसमें चराचर का हित समाया है : नलिनी

आज चार पी खतरे में हैं. प्लैनेट, पिपुल, पीस तथा प्रोस्पेरिटीः प्रो. संजय पासवान

bareilly@inext.co.in

BAREILLY (25 Sept): आरयू के पं. दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ में प्रज्ञा परिषद के संयुक्त तत्वाधान में वेडनसडे को समावेश और एकात्मता विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया. संगोष्ठी का इनॉग्रेशन में प्रो. एनएन पाण्डेय निदेशक प्रज्ञा परिषद शोधपीठ ने किया. संगोष्ठी के निदेशक एवं पं. दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ के समन्वयक व कार्यक्रम के आयोजक डॉ. प्रवीण कुमार तिवारी विषय प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए कहा कि एकात्मता समावेशन के आगे भी जाना है. एकात्मता कुटुंव भाव है, जिसका विसतार व्यष्टि से समाष्टि, समाष्टि से सृष्टि तथा सृष्टि से परमेष्टि तक है.

अन्त्योदय से पुनरोदय तक

कार्यक्रम के चीफ गेस्ट पूर्व केन्द्रीय मंत्री मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री प्रो. संजय पासवान ने कहा कि पं. दीन दयाल उपाध्याय का एबीसीडी है अन्त्योदय, चित्रि तथा डिकोलोनाईजेशन, उन्होंने कहा कि आज चार पी खतरे में हैं. प्लैनेट, पिपुल, पीस तथा प्रोस्पेरिटी. उन्होंने कहा कि श्रेष्ठ विचारों को देशानुकूल बनाए. आरयू वीसी प्रो. अनिल शुक्ल ने कहा कि दीनदयाल जी का दर्शन अन्त्योदय से शुरू होकर पुनरोदय तक जाता है. इस मौके पर प्रज्ञा प्रवाह के क्षेत्रीय संयोजक भगवती प्रसाद राघव ने भी मार्गदर्शन कि

पं. दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ में समावेश और एकात्मकता विषय पर हुई संगोष्ठी

मम हिताय से सर्वजन हिताय तक यात्रा

इनॉग्रेशन के बाद तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया. जिसमें अध्यक्षता संकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय प्रो. नलिनी श्रीवास्तव ने की. कार्यक्रम के चीफ गेस्ट प्रो. बीआर कुकरेती रहे. समापन सत्र में चीफ गेस्ट भारतीय शिक्षण मंच के संस्थापक तथा जीव का भारतीय प्रतिमान, पुस्तक के लेखक दिलीप केलकर ने कहा कि एकात्मता मम हिताय से सर्वजन हिताय की यात्रा है. उन्होंने कहा कि नौकर बनने के लिए लालति समाज भारत की वास्तविक चित्र नही है. सत्य वही है जिसमें चराचर का हित समाया है. कार्यक्रम में डॉ. देवेश मिश्रा, डॉ. विमल कुमार, डॉ. सुरेश कुमार, डॉ. मीनाक्षी द्विवेदी, डॉ. दीपिका , डॉ. ललित पाण्डेय और कामिनी विश्वकर्मा आदि मौजूद रहीं.

Paint X Lite

प्रेम और दया ही मनुष्य बनाते हैं

बरेली | प्रमुख संवाददाता

पंडित दीन दयाल उपाध्याय शोधपीठ तथा प्रज्ञा प्रवाह की ओर से राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन रुहेलखंड विश्वविद्यालय में किया गया। दीन दयाल उपाध्याय की दृष्टि में समावेशन और एकात्मकता विषय पर आयोजित इस संगोष्ठी का शुभारंभ पूर्व केंद्रीय मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री प्रो. संजय पासवान ने किया।

मुख्य अतिथि संजय पासवान ने कहा कि पंडित दीन दयाल की एबीसीडी है अंत्योदय और डिकोलोनाइजेशन। उन्होंने कहा कि आज चार पी खतरे में हैं। प्लैनेट, पीपल, पीस और प्रास्पेरिटी। उन्होंने कहा कि भारत की चित्ति को समझे बिना और पंडित दीन दयाल के एकात्म मानव दर्शन आधारित जीवन अपनाए बिना समरस समाज व कल्याणमय विश्व की कल्पना नहीं की जा सकती है। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता भारतीय शिक्षा संस्थान के राष्ट्रीय सचिव डॉ. शिव कुमार ने कहा कि दीन दयाल कहते थे कि मात्र मनुष्य के घर में जन्म लेने से ही कोई मनुष्य नहीं बन जाता है।प्रेम, दया करुणा व मूल्य उसे मनुष बनाते हैं।

उन्होंने कहा कि विश्व के श्रेष्ठ विचारों को देशानूकूल बनाइए। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. अनिल शुक्ल ने दीनदयाल जी का दर्शन अंत्योदय से प्रारंभ होकर पुनरोदय तक जाता है। उन्होंने कहा कि पैर में कांटा चुभने पर पूरे शरीर में वेदना होती है। पेट में गई दवा उसे ठीक करती है। उसी प्रकार से समाज जीवन में एकात्मता को समझा जा सकता है। क्षेत्रीय संयोजक भगवती प्रसाद राघव, सह समन्वयक डॉ. रामबाबू सिंह, डॉ. विमल कुमार ने उद्घाटन सत्र का संचालन किया। इसके बाद तकनीकी सत्रों का आयोजन हुआ। इसकी अध्यक्षता डॉ. नलिनी श्रीवास्तव ने की। मुख्य अतिथि प्रो. बीआर कुकरेती रहे। समापन सत्र के मुख्य अतिथि जीवन का भारतीय प्रतिमान पुस्तक के लेखक दिलीप केलकर जी ने कहा कि एकात्मता मम हिताय से सर्वजन हिताय की यात्रा है। इस दौरान प्रज्ञा के निदेशक प्रो. एनएन पांडेय, आयोजक प्रवीण कुमार तिवारी, डॉ. रश्मि रंजन, डॉ. मीनाक्षी द्विवेदी, डॉ. दीपीका मिश्रा, डॉ. पवन सिंह मौजूद थे।

आदर्श है पं. दीनदयाल उपाध्याय का जीवन

बरेली। एकात्म मानवतावाद के प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर शहर में जगह-जगह कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। लोकतंत्र रक्षक सेनानी समिति की ओर से इस अवसर पर दीनदयाल उपाध्याय के जीवन पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। वीरेन्द्र अटल ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजनीति में सादगी, शालीनता व विद्वता की प्रतिमूर्ति थे। लोकतंत्र सेनानी सुरेश बाबू मिश्रा ने कहा कि पं. दीनदयाल चाहते थे कि कतार के अंतिम व्यक्ति तक सरकारी सुविधाएं पहुंचे। चेतावनी दी कि अगर उनकी पुण्यतिथि 11 फरवरी तक प्रतिमा नहीं लगवाई गई तो सांसद के आवास पर धरना-प्रदर्शन करेंगे। इस अवसर पर अरुण कुमार, वेदप्रकाश, सतीश शर्मा, सुमंत मौजूद रहे।

दीनदयाल उपाध्याय जूनियर हाईस्कूल में भी कार्यक्रम

दीनदयाल उपाध्याय जूनियर हाईस्कूल में भी पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती मनाई गई। वक्ताओं ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर ब्लॉक क्यारा की ओर से छात्रों के लिए हेल्थ चेकअप कैंप लगाया गया। कार्यक्रम में विभिन्न छात्रों ने कविता, गीत व नाटक में भाग लिया। इस अवसर पर प्रीति सक्सेना, निधि सिंह, रूप किशोर, इशिता, राहुल, अनिकेत आदि लोग मौजूद रहे।

पं. दीन दयाल उपाध्याय की जयंती मनाई

बहेड़ी। एमजीएम इंटर कॉलेज में बुधवार को पंडित दीन दयाल उपाध्याय की जयंती मनाई गई। इस मौके पर मुख्य अतिथि विधायक छत्रपाल सिंह गंगवार ने कहा कि विधार्थी पंडित दीन दयाल उपाध्याय के पदचिन्हों पर चलकर भारतीय संस्कृति के द्योतक बने। प्रधानाचार्य अशोक गंगवार ने कहा कि व्यक्तिगत जीवन में पंडित दीन दयाल को कोई महत्वाकांक्षा नही थी। प्रबंधक चौधरी गजेंद्र सिंह, महेश शर्मा, वीरपाल गंगवार, ओमेंद्र कुमार, मनोज शर्मा, करन सिंह, धर्मेंद्र कुमार, यशपाल सिंह, जितेंद्र राठौर, दिनेश राठौर, विक्रम शर्मा, सुरेंद्र गंगवार थे।

'भारतीय ज्ञान और परंपरा विश्व में श्रेष्ठ'

सीसीएसयू में कार्यशाला

मेरठ। सीसीएसयू के पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विवि और प्रज्ञा प्रवाह पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के तत्वावधान में वेबिनार का आयोजन किया गया। इसमें पुनरुत्थान विद्यापीठ गुजरात की कुलपति इंदुमती काटदरे ने कहा कि भारतीय ज्ञान और परंपरा विश्व में श्रेष्ठ है, चाहे वह प्राचीन समय हो या वर्तमान समय हो, उसकी तुलना पाश्चात्य जगत के ज्ञान विज्ञान से नहीं की जा सकती। 'शोध की भारतीय व समकालीन दृष्टि' विषय पर आयोजित वेबिनार में उन्होंने कहा कि भारतीय समाज में ऐसे बहुत से विद्वान हैं, जो कभी स्कूल और कॉलेज नहीं गए, लेकिन उनका ज्ञान भारतीय परंपरा के आधार पर अवलंबित है। कार्यशाला में डॉ. देवेश मिश्र ने स्वस्ति गायन किया। डॉ. राजेंद्र कुमार पांडेय ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. प्रवीण कुमार ने अतिथियों का परिचय कराया। प्रोफेसर अनिल कुमार शुक्ल रुहेलखंड विवि, प्रति कुलपति प्रो. वाई विमला समेत अन्य लोग कार्यशाला में ऑनलाइन शामिल हुए।

दीनदयाल उपाध्याय का मनाया निर्वाण दिवस

बरेली। रुहेलखंड विश्वविद्यालय के पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ के तत्वावधान में गुरुवार को पं दीनदयाल उपाध्याय के निर्वाण दिवस पर निबन्ध लेखन व पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता व पुरस्कार वितरण समारोह" का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्ष प्रोफेसर नलिनी श्रीवास्तव, संकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, मुख्य अतिथि प्रो . एनएन पांडेय पूर्व समन्वयक पण्डित दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ, विशिष्ठ अतिथि प्रो . रश्मि अग्रवाल और प्रो . केके चौधरी रहे। दत्तोपंत ठेंगड़ी जी ने इसी एकात्म मानव दर्शन के आधार पर अर्थ तंत्र के लिए भी भारतीय मार्ग को अपनी पुस्तक 'थर्डवे' के रूप में प्रस्तुत किया। अवसर पर आयोजित निबंधन लेखन प्रतियोगित्ता में सोमदत्त ने प्रथम, दिव्यांशी शुक्ला ने द्वितीय, मानसी गौड़ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता में अंशिका अग्रवाल ने प्रथम, नैनिका सक्सेना ने द्वितीय, आकाश कुमार मिश्र ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का आयोजन डॉ . प्रवीण कुमार तिवारी ने किया। कार्यक्रम में विमल कुमार, डा . कीर्ति प्रजापति, डॉ . रामबाबू सिंह, रश्मि रंजन, डॉ . मीनाक्षी आदि थे।

शोध की भारतीय व समकालीन दृष्टि विषयक सात-दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ

मेरठ। पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ राजनीति विज्ञान विभाग चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ, पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली एवं प्रज्ञा प्रवाह पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र(प्रज्ञा परिषद ब्रज, देवभूमि विचार मंच उत्तराखंड तथा तपोभूमि विचार परिषद मेरठ) के संयुक्त तत्वावधान में "शोध की भारतीय व समकालीन दृष्टि" विषयक सात-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ किया गया।डॉ देवेश मिश्र द्वारा स्वस्ति गायन के द्वारा कार्यशाला का प्रारंभ हुआ। डॉ राजेंद्र कुमार पांडेय सह आचार्य राजनीति विज्ञान विभाग ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ प्रवीण कुमार तिवारी समन्वयक पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय बरेली ने अतिथियों का परिचय कराया। प्रोफेसर पवन कुमार शर्मा अध्यक्ष राजनीति विज्ञान विभाग एवं निदेशक ,पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ व बाबू जगजीवन राम शोध पीठ ने विषय प्रवेश कराते हुए कहा कि भारत की ज्ञान परंपरा अद्भुत रही है उसने विश्व एवं भारत को मार्गदर्शन दिखाया है। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला का आयोजन माननीय कुलपति नरेंद्र कुमार तनेजा जी के अकादमी निर्देशन में किया जा रहा है इस कार्यशाला का उद्देश्य भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा एवं भारतीय जीवन दृष्टि से विद्यार्थियों अनुसंधानकताओं विद्वतजनों एवं अध्येताओं को परिचित कराना है। उन्होंने कहा कि प्राचीन भारत में ऐसे बहुत से उद्धरण एवं प्रमाण मौजूद हैं जिनसे यह ज्ञात होता है कि पाश्चात्य जगत के विद्वानों ने भारतीय ऋषियों-मुनियों से ज्ञान विज्ञान एवं दर्शन सीखा और उसका प्रयोग अपने यहां किया। उन्होंने कहा कि प्राचीन समय से लेकर 18वीं शताब्दी तक भारत ज्ञान विज्ञान में श्रेष्ठ था जिसके बारे में विलियम जॉन्स भी लिखता है। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला मैं प्रतिभाग करने के लिए लगभग 3000 अध्येताओं ने पंजीकरण कराया है जिसमें भारत के लगभग सभी राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों और चार विदेशी देशों (दुबई फिलीपींस नाइजीरिया नेपाल) के अध्येताओं ने प्रतिभाग करने के लिए पंजीकरण कराया है ?। इसमें जिसमें 73 आचार्य 205 सह आचार्य 1311 सहायक आचार्य 877 शोध विद्यार्थी 375 विद्यार्थी एवं 154 अध्येता विभिन्न विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े हुए हैं। जिसमें 1745 पुरुषों ने एवं 1200 सौ के लगभग महिलाएं है। उन्होंने कहा कि भारतीय विद्यार्थियों विद्वतजनों अनुसंधानकताओं को भारतीय ज्ञान-विज्ञान क्षेत्र को भारतीय दृष्टि से देखना होगा और भारतीयता के आधार पर ही शोध कार्य को करना होगा ना कि पाश्चात्य जगत द्वारा बताई गई अनुसंधान की प्रविधियों को अपना कर शोध कार्य करना होगा उन्होंने कहा कि प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय तक भारतीय ज्ञान परंपरा में बहुत ही विपुल साहित्य एवं ज्ञान विज्ञान से जुड़ी हुई पुस्तकों का बृहत स्तर पर निर्माण किया गया है एवं उपलब्ध है।

खतरे में चार 'पी'.. प्लेनेट, पीपुल, पीस और प्रॉस्पेरिटी

पूर्व केंद्रीय मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री प्रो. संजय पासवान ने किया आगाह

अमर उजाला ब्यूरो

समापन सत्र को संबोधित करते दीपक केलकर। अमर उजाला

बरेली। रुहेलखंड विश्वविद्यालय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ और प्रज्ञा परिषद के संयुक्त तत्वावधान में 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि में समावेशन और एकात्मता' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व केंद्रीय मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री प्रो. संजय पासवान ने कहा कि मेरे हिसाब से पंडित दीनदयाल का एबीसीडी, ए फॉर अंत्योदय, बी फॉर भारत सर्वोपरि, सी फॉर चित्ति (राष्ट्र की चेतना) और डी फॉर डिकोलनाइजेशन इन इंडियन माइंड (उपनिवेशवाद से मुक्ति) है। आज चार 'पी'.. प्लेनेट (पृथ्वी), पीपुल (जनता), पीस (शांति) और प्रॉस्पेरिटी (समृद्धि) खतरे में है। उन्होंने कहा कि भारत की चित्ति को समझे बिना समरस समाज और कल्याणकारी विश्व की कामना नहीं हो सकी।

उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के राष्ट्रीय सचिव शिवकुमार ने कहा कि पंडित दीनदयाल कहते थे कि मनुष्य के घर में जन्म लेकर कोई मनुष्य नहीं बन जाता। प्रेम, दया, करुणा और मूल्य उसे मनुष्य बनाते हैं। अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. अनिल शुक्ला ने कहा, पंडित दीनदयाल का दर्शन अंत्योदय से होकर पुनरोदय तक जाता है। समापन सत्र में मुख्य अतिथि भारतीय शिक्षण मंच के संस्थापक दीपक केलकर ने कहा एकात्मता मम हिताय से सर्वजन हिताय की यात्रा है। विशिष्ठ वक्ता डॉ. देवेश मिश्र ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। इस दौरान शोधपत्र भी प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम में प्रो. नलिनी श्रीवास्तव, डॉ. आशुतोष, डॉ. विमल, डॉ. रश्मि रंजन, डॉ. मीनाक्षी, डॉ. योगेश आदि मौजूद रहे।

विश्वविद्यालय में हुई पं. दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ और प्रज्ञा परिषद की संगोष्ठी

जारी हैं शोध कार्यक्रम : डॉ. प्रवीण तिवारी ने बताया कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ के अंतर्गत इस समय दो पीएचडी और आठ लघु शोध चल रहे हैं, जिन्हें शोधपीठ सहायता करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं जीवन दृष्टि विश्व में श्रेष्ठ

सीसीएसयू परिसर स्थित राजनीति विज्ञान विभाग में सात दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ

कार्यालय संवाददाता

मेरठ। पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ राजनीति विज्ञान विभाग सीसीएसयू में सात दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ हुआ।? कार्यशाला पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली एवं प्रज्ञा प्रवाह पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र प्रज्ञा परिषद ब्रजए देवभूमि विचार मंच उत्तराखंड तथा तपोभूमि विचार परिषद मेरठ के संयुक्त तत्वावधान में शोध की भारतीय व समकालीन दृष्टि विषयक पर मंथन होगा। डॉ राजेंद्र कुमार पांडेय सह आचार्य राजनीति विज्ञान विभाग ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ प्रवीण कुमार तिवारी समन्वयक पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय बरेली ने अतिथियों का परिचय कराया। प्रोफेसर पवन कुमार शर्मा अध्यक्ष राजनीति विज्ञान विभाग एवं निदेशक एपंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ व बाबू जगजीवन राम शोध पीठ ने विषय प्रवेश कराते हुए कहा कि भारत की ज्ञान परंपरा अद्भुत रही है। उसने विश्व एवं भारत को मार्गदर्शन दिखाया है। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला का आयोजन कुलपति नरेंद्र कुमार तनेजा के अकादमी निर्देशन में किया जा रहा है । कार्यशाला का उद्देश्य भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा एवं भारतीय जीवन दृष्टि से विद्यार्थियों अनुसंधानकर्ताओं विद्वतजनों एवं अध्येताओं को परिचित कराना है। जिससे वह भारत की गौरवशाली संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा के बारे में जान सके और वर्तमान समय में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं जीवन दृष्टि के आधार पर शोध कार्य संपन्न कर सके ना कि पाश्चात्य दृष्टिकोणों का अनुगमन आंख मूंदकर करें। उन्होंने कहा कि प्राचीन भारत में ऐसे बहुत से उद्धरण एवं प्रमाण मौजूद हैं । जिनसे यह ज्ञात होता है कि पाश्चात्य जगत के विद्वानों ने भारतीय ऋषियों.मुनियों से ज्ञान विज्ञान एवं दर्शन सीखा और उसका प्रयोग अपने यहां किया। उन्होंने कहा कि प्राचीन समय से लेकर 18वीं शताब्दी तक भारत ज्ञान विज्ञान में श्रेष्ठ था जिसके बारे में विलियम जॉन्स भी लिखता है।

उद्घाटन सत्र की मुख्य वक्ता इन्दुमती काटदरे कुलपति पुनरुत्थान विद्यापीठ गुजरात ने शोध की भारतीय दृष्टि विषय पर बोलते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा एवं जीवन दृष्टि विश्व में श्रेष्ठ है ।? चाहे वह प्राचीन समय हो या वर्तमान समय हो उसकी तुलना पाश्चात्य जगत के ज्ञान विज्ञान से नहीं की जा सकती। उन्होंने कहा कि भारतीय विद्यार्थियों विद्वतजनों अनुसंधानकर्ताओं को भारतीय ज्ञान.विज्ञान क्षेत्र को भारतीय दृष्टि से देखना होगा और भारतीयता के आधार पर ही शोध कार्य को करना होगा ना कि पाश्चात्य जगत द्वारा बताई गई अनुसंधान की प्रविधियों को अपना कर शोध कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय तक भारतीय ज्ञान परंपरा में बहुत ही विपुल साहित्य एवं ज्ञान विज्ञान से जुड़ी हुई पुस्तकों का बृहत स्तर पर निर्माण किया गया है।? भारतीय जीवन पद्धति एवं सनातन ज्ञान परंपरा पर अनुसंधान कार्य करना होगा। उसका गहराई में जाकर अध्ययन करना होगा उस पर चिंतन एवं मनन करना होगा कि किस तरह हम उसे अपने जीवन में आत्मसात करें और भारत का एवं पूरे विश्व का कल्याण कर सके। प्रो वाई विमला प्रति कुलपति चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि भारतीय सनातन परंपरा में शोध के विभिन्न आयामों के बारे में विस्तार से बताया गया है लेकिन वर्तमान समय में संस्कृत भाषा एवं स्वभाषाओ का ज्ञान ना होने के कारण वर्तमान समय में बहुत से विद्यार्थी शिक्षक एवं विद्वत जन भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा से परिचित नहीं है ।

भारतीयता आधारित हो शोध

मेरठ : चौ.चरणसिंह विवि के राजनीति विज्ञान विभाग में शोध की भारतीय और समकालीन दृष्टि विषय पर सात दिवसीय ई राष्ट्रीय कार्यशाला शुरू हुई। जिसमें वक्ताओं ने भारतीयता आधारित शोध करने पर जोर दिया। पुनरुत्थान विद्यापीठ गुजरात के कुलपति इंदुमति ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा और जीवन दृष्टि विश्व में श्रेष्ठ है। प्रो. अनिल कुमार शुक्ल ने कहा कि भारत को भारतीय संस्कृति से देखने की जरूरत है न कि किसी और दूसरी संस्कृति से। प्रति कुलपति प्रो. वाई विमला ने भारतीय सनातन परंपरा में शोध के विभिन्न आयामों के बारे में विस्तार से बताया। प्रो. पवन कुमार शर्मा ने धन्यवाद किया। डा. राजेंद्र पांडेय ने स्वागत किया।–जासं

भारतीय व समकालीन- दृष्टि विषयक पर सात-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ किया गया

मेरठ। पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ राजनीति विज्ञान विभाग चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ, पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली एवं प्रज्ञा प्रवाह पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र(प्रज्ञा परिषद ब्रज, देवभूमि विचार मंच उत्तराखंड तथा तपोभूमि विचार परिषद मेरठ) के संयुक्त तत्वावधान में शोध की भारतीय व समकालीन दृष्टि विषयक सात-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ किया गया।डॉ देवेश मिश्र द्वारा स्वस्ति गायन के द्वारा कार्यशाला का प्रारंभ हुआ। डॉ राजेंद्र कुमार पांडेय सह आचार्य राजनीति विज्ञान विभाग ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ प्रवीण कुमार तिवारी समन्वयक पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय बरेली ने अतिथियों का परिचय कराया। प्रोफेसर पवन कुमार शर्मा अध्यक्ष राजनीति विज्ञान विभाग एवं निदेशक ,पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ व बाबू जगजीवन राम शोध पीठ ने विषय प्रवेश कराते हुए कहा कि भारत की ज्ञान परंपरा अद्भुत रही है उसने विश्व एवं भारत को मार्गदर्शन दिखाया है। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला का आयोजन माननीय कुलपति नरेंद्र कुमार तनेजा जी के अकादमी निर्देशन में किया जा रहा है इस कार्यशाला का उद्देश्य भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा एवं भारतीय जीवन दृष्टि से विद्यार्थियों अनुसंधानकर्ताओं विद्वतजनों एवं अध्येताओं को परिचित कराना है जिससे वह भारत की गौरवशाली संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा के बारे में जान सके और वर्तमान समय में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं जीवन दृष्टि के आधार पर शोध कार्य संपन्न कर सके ना कि पाश्चात्य दृष्टिकोणों का अनुगमन आंख मूंदकर करें।

उन्होंने कहा कि प्राचीन भारत में ऐसे बहुत से उद्धरण एवं प्रमाण मौजूद हैं जिनसे यह ज्ञात होता है कि पाश्चात्य जगत के विद्वानों ने भारतीय ऋषियों-मुनियों से ज्ञान विज्ञान एवं दर्शन सीखा और उसका प्रयोग अपने यहां किया। उन्होंने कहा कि प्राचीन समय से लेकर 18वीं शताब्दी तक भारत ज्ञान विज्ञान में श्रेष्ठ था जिसके बारे में विलियम जॉन्स भी लिखता है। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला मैं प्रतिभाग करने के लिए लगभग 3000 अध्येताओं ने पंजीकरण कराया है जिसमें भारत के लगभग सभी राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों और चार विदेशी देशों (दुबई फिलीपींस नाइजीरिया नेपाल) के अध्येताओं ने प्रतिभाग करने के लिए पंजीकरण कराया है?। इसमें जिसमें 73 आचार्य 205 सह आचार्य 1311 सहायक आचार्य 877 शोध विद्यार्थी 375 विद्यार्थी एवं 154 अध्येता विभिन्न विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े हुए हैं। जिसमें 1745 पुरुषों ने एवं 1200 सौ के लगभग महिलाएं हैं। उद्घाटन सत्र की मुख्य वक्ता माननीय इन्दुमती काटदरे जी कुलपति पुनरुत्थान विद्यापीठ गुजरात ने शोध की भारतीय दृष्टि विषय पर बोलते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा एवं जीवन दृष्टि विश्व में श्रेष्ठ है चाहे वह प्राचीन समय हो या वर्तमान समय हो उसकी तुलना पाश्चात्य जगत के ज्ञान विज्ञान से नहीं की जा सकती। उन्होंने कहा कि भारतीय विद्यार्थियों विद्वतजनों अनुसंधानकर्ताओं को भारतीय ज्ञान-विज्ञान क्षेत्र को भारतीय दृष्टि से देखना होगा और भारतीयता के आधार पर ही शोध कार्य को करना होगा ना कि पाश्चात्य जगत द्वारा बताई गई अनुसंधान की प्रविधियों को अपना कर शोध कार्य करना होगा उन्होंने कहा कि प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय तक भारतीय ज्ञान परंपरा में बहुत ही विपुल साहित्य एवं ज्ञान विज्ञान से जुड़ी हुई पुस्तकों का बृहत स्तर पर निर्माण किया गया है एवं उपलब्ध है लेकिन स्वतंत्रता के पश्चात या कहे के अंग्रेजों के आने के बाद उन्होंने हमारी शिक्षण पद्धति एवं ज्ञान विज्ञान को छिन्न-भिन्न कर दिया जिसकी वजह से हमें पाश्चात्य जगत के द्वारा बताए गए ज्ञान विज्ञान अनुसंधान प्रविधियों के सिद्धांत नियम ही अनुकरणीय लगने लगे जबकि हमारे यहां प्राचीन समय से ही हर क्षेत्र में शोध कार्य किया गया है और संदर्भ एवं प्रमाण सहित किया गया है।

पाश्चात्य जगत ने हमारे यहां के ज्ञान विज्ञान एवं साहित्य को चोरी करके उसको अपना ज्ञान विज्ञान बताया और अपने आप को भारतीयों से सर्वश्रेष्ठ सिद्ध किया जिससे भारतीयों को अपना ज्ञान ही निम्न कोटि का लगने लगा जबकि वर्तमान समय में जैसे-जैसे भारतीय द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा पर अनुसंधान कार्य किया जा रहा है सच्चाई पूरे विश्व को पता चल रही है कि भारतीय ज्ञान उच्च कोटि का है जिसकी तुलना में पाश्चात्य जगत का ज्ञान कहीं भी टिकता नहीं है। उ

न्होंने कहा कि ज्ञान एक साधना है ज्ञान साधना के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है और कोई दूसरा मार्ग उसको प्राप्त करने का नहीं है जैसे कि वर्तमान समय में जो शिक्षण पद्धति है उसमें पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त किया जाता है जबकि हमारे भारतीय समाज में ऐसे बहुत से विद्वान है जो कभी विद्यालय महाविद्यालय नहीं गए लेकिन उनका ज्ञान भारतीय परंपरा के आधार पर अवलंबित है और ज्ञान का संबंध डिग्री से नहीं है ज्ञान का संबंध स्वबोध से है स्व की प्राप्ति से है स्व के ज्ञान से है। उन्होंने कहा कि ज्ञान ब्रह्म है अर्थात ज्ञान ब्रह्मांडीय है जिस पर किसी का अधिकार नहीं है ज्ञान सभी को प्राप्त होना चाहिए और उसकी पहुंच सभी तक होनी चाहिए उन्होंने कहा कि हमारे प्राचीन ग्रंथों उपनिषदों आदि में जीवन की प्रत्येक दृष्टि के बारे में विस्तार से बताया गया है और मनुष्य को कैसा जीवन व्यतीत करना चाहिए कैसे समाज का निर्माण होना चाहिए कैसे राष्ट्र का निर्माण होना चाहिए और राष्ट्र प्रगति कैसे करें और उस में निवास करने वाले नागरिक सुखी एवं शांतिपूर्ण जीवन कैसे व्यतीत करें इसके बारे में विस्तार पूर्वक बताया गया है लेकिन वर्तमान समय में हमने अपनी भारतीय जीवन दृष्टि को भुला दिया है जिसकी वजह से बहुत सी समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना विश्व एवं भारतीय समाज को करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा पर शोध करने के लिए हमें शोध की शब्दावली संकल्पना संदर्भ प्रविधियों सभी को भारतीय शब्दावली के अनुरूप गढ़ना होगा तभी भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा पर शोध कार्य गुणात्मक एवं उच्च कोटि का संभव हो पाएगा।प्रोफेसर अनिल कुमार शुक्ल जी कुलपति महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत को भारतीय संस्कृति से देखने की जरूरत है ना कि किसी और दूसरी संस्कृति से। उन्होंने कहा कि सामाजिक आर्थिक राजनीतिक सांस्कृतिक विषयों पर ज्यादा प्रमाणिक अनुसंधान कार्य करने के लिए अध्येताओं को भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन समझना सोचना एवं आत्मसात करना होगा तभी भारतीयता पर अवलंबित शोध कार्य संपन्न हो पाएगा। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में पूरा विश्व भारत की ओर टकटकी लगाकर देख रहा है। कि भारतीय जीवन दृष्टि एवं ज्ञान परंपरा इस महामारी कोविड-19 का कोई समाधान प्रस्तुत करें एवं बहुत से पश्चिमी देश वर्तमान समय में भारतीय जीवन मूल्य एवं भारतीय आयुर्वेद योग पद्धति को अपना रहे हैं। जिससे पता चलता है। कि भारतीय ज्ञान विज्ञान एवं जीवन पद्धति उच्च कोटि की एवं सर्वश्रेष्ठ है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में बहुत से भारतीय अध्येताओं को लगता है कि पश्चिमी ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ है और भारतीय ज्ञान विज्ञान को वह नकारते हैं। जिसकी वजह से भारतीय समाज के बहुत से अध्येताओं में हीन भावना आ गई है जबकि ऐसा नहीं है।भारतीय जीवन पद्धति एवं सनातन ज्ञान परंपरा पर अनुसंधान कार्य करना होगा उसका गहराई में जाकर अध्ययन करना होगा उस पर चिंतन एवं मनन करना होगा कि किस तरह हम उसे अपने जीवन में आत्मसात करें। और भारत का एवं पूरे विश्व का कल्याण कर सकें। प्रो वाई विमला प्रति कुलपति चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि भारतीय सनातन परंपरा में शोध के विभिन्न आयामों के बारे में विस्तार से बताया गया है। लेकिन वर्तमान समय में संस्कृत भाषा एवं स्वभाषाओ का ज्ञान ना होने के कारण वर्तमान समय में बहुत से विद्यार्थी शिक्षक एवं विद्वत जन भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा से परिचित नहीं है। जबकि वर्तमान समय में हमें भारतीय जीवन दृष्टि पर शोध कार्य करने के लिए इन भाषाओं का ज्ञान होना बहुत ही आवश्यक है।नहीं तो पाश्चात्य जगत के ज्ञान विज्ञान को ही हम श्रेष्ठ मानते रहेंगे और उसी ज्ञान का अनुगमन करते रहेंगे जबकि वर्तमान समय में भारतीय जीवन दृष्टि भारतीय आयुर्वेद एवं योग पद्धति को विश्व के विकसित देश अपना रहे हैं जबकि हम अपनी ही संस्कृति एवं परंपराओं को भूल चुके हैं हमें उनको पुनर्जीवित करना होगा और शोध कार्य करने के लिए रूपरेखा भी बनानी होगी कि कैसे हम उच्च कोटि के शोध कार्य कर पाए जिससे भारत फिर से विश्व गुरु बन पाए।प्रो पवन कुमार शर्मा ने सभी अतिथियों विद्वत जनों अभियांत्रिकी विभाग कर्मचारियों पत्रकार बंधुओं सहयोगीयों एवं सभी प्रतिभागियों का कार्यशाला में सहयोग करने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यशाला में माननीय भगवती प्रसाद राघव जी क्षेत्रीय संयोजक प्रज्ञा प्रवाह पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र प्रो वीरपाल सिंह डॉ राजेंद्र कुमार पांडेय डॉ देवेश मिश्र डॉ प्रवीण कुमार तिवारी डॉ भूपेंद्र प्रताप डॉ देवेंद्र उज्जवल श्री मितेंद्र गुप्ता संतोष त्यागी नितिन त्यागी भानु प्रताप आदि का सहयोग रहा।

पाश्चात्य नहीं भारतीयता पर करें शोध कार्य : इंदुमति

मेरठ | वरिष्ठ संवाददाता

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं जीवन दृष्टि विश्व में श्रेष्ठ है। हमें भारतीय ज्ञान-विज्ञान को भारतीय दृष्टि से देखना होगा। भारतीयता के आधार पर शोध कार्य करें ना कि पाश्चात्य जगत द्वारा तय अनुसंधान की प्रविधियों को अपनाकर। प्राचीन से वर्तमान समय तक भारतीय ज्ञान परंपरा में विपुल साहित्य एवं ज्ञान-विज्ञान से जुड़ी पुस्तकें लिखी गई। हमारी शिक्षण पद्धति एवं ज्ञान विज्ञान को छिन्न-भिन्न कर दिया।

सीसीएसयू के पं.दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ, बरेली विवि के पं.दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ एवं प्रज्ञा प्रवाह पश्चिमी उप्र क्षेत्र द्वारा 'शोध की भारतीय एवं समकालीन दृष्टि' विषय पर उक्त बात इंदुमति काटदरे ने की। बरेली विवि के कुलपति प्रो.अनिल शुक्ल ने कहा कि भारत को भारतीय संस्कृति से देखने की जरूरत है ना कि किसी और दूसरी संस्कृति से। आज पूरी दुनिया भारत की ओर टकटकी लगाकर देख रहा है। भारतीय ज्ञान-विज्ञान एवं जीवन पद्धति सर्वश्रेष्ठ है।

प्रोवीसी प्रो.वाई विमला ने कहा कि हमें भारतीय जीवन दृष्टि पर शोध कार्य करने के लिए संस्कृत का ज्ञान होना जरुरी है। प्रो.पवन शर्मा, भगवती प्रसाद राघव, प्रो.वीरपाल सिंह, डॉ.राजेंद्र पांडेय, डॉ.देवेश मिश्र आदि रहे।